15.30 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

ELEVENTH REPORT

SHRI J. M. GOWDER (Nilgiris) : I move :

"That this House do agree with the Eleventh Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 5th April, 1972."

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That this House do agree with the Eleventh Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 5th April, 1972."

The motion was adopted

15.31 hrs.

RESOLUTION *RE* : INDUSTRIAL RELATIONS AND LABOUR POLICY—*Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : We now take up further consideration of the following resolution moved by Shri Indrajit Gupta on the 24th March, 1972 :

"This House is of opinion that in the interests of overcoming industrial stagnation, developing self-reliance and expanding social justice for the working class, the Government of India should immediately adopt a new industrial relations and labour policy insuring rights of trade union recognition, collective bargaining without third-party interference, removal of curbs on the right to strike and effective workers' control over production at different levels."

Shri M. C. Daga was on his feet. He has already taken 10 minutes. He should try to conclude now.

SHRI M. C. DAGA (Pali) : I may be given at least 10 minutes more.

MR. DEPUTY-SPEAKER : We have two hours and a half for this. If you take more time, then what is left for others ? You have taken 10 minutes. Try to conclude now. This resolution was discussed a fortnight ago, and for all I know, you will be repeating all the arguments that were made on the last occasion.

श्री मूलचन्द डागा (पाली): No, Sir. I will not repeat even a single argument.

उपाध्यक्ष महोदय, खाडिलकर साहब ने कल जो राज्य सभा में घोषणा की है उसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ कि वे इस सम्बन्ध में एक काम्प्रिहेंसिव बिल यहां पर लाना चाहते हैं। लेकिन उसमें जो आप वर्कमेन और इंडस्ट्री की डेफनीशन में परिवर्तन करना चाहते हैं उसमें मजदूरों की जो भावना है उसको भी ध्यान में रखियेगा। मेरा कहना यह है कि आज हम मजदूरों की दशा में सुधार करने की बात करते हैं लेकिन उसकी बाबत इंटक और एटक ने एक राय दी, एक फार्मूला दिया उसपर सरकार ने अभी तक कोई विचार नहीं किया है और सरकार को जो कदम उठाने चाहिए वह कदम नहीं उठाती है। इसका एकमात्र कारण, जैसा कि मैं समझता हूं, यही है कि हमारा जो ट्रेड यूनियन मूवमेंट है वह कुछ ऐसे लोगों का है जो अशिक्षित है, जो अधकचरे राजनितिज्ञ हैं वे अपने राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उन यूनियनों पर हावी है। उसके कारण जो हमारे एम्स ऐंड आब्जेक्ट्स हैं वह पूरे नहीं हो पाते हैं। दूसरे जो सरकारी मशीनरी है वह कानूनों की आड़ में मजदूरों को एक्स्पलायट करती है, मजदूरों का शोषण करती है। आज पूंजीवादी, सरकार की डुलमुल नीति के कारण, मजदूरों का शोषण करते हैं। मैं यह भी मानता हूं कि ट्रेड यूनियन के लीडर्स अशिक्षित हैं, असंयमी हैं, अधकचरे हैं और वे मजदूरों के माध्यम से अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहते हैं। इसलिए मैं समझता हूं जबतक मजदूरों को पालिटिक्स से दूर नहीं कर दिया जायेगा और स्वस्थ ट्रेड यूनियन्स नहीं बन जायेगी तब तक मजदूरों का कल्याण होने